कुम्रहार(कुम्हरार)

Mandip Kumar Chaurasiya

Assistant professor(Guest)

Dept. Of A.I.H. & Archaeology

Patna University,Patna-800005

M.A. Semester-II

Paper/CC – (8) Concept and Technique of Archaeology,Pre and Proto History of Africa & Archaeology Sites

आधुनिक पटना के दक्षिणी भाग में स्थित कुम्रहार को मौर्यकालीन अवशेषो की उपलब्धि ने एक महत्वपूर्ण पुरास्थल बना दिया। यहाँ दो बार वृहद उत्खनन कराये गये सर्वप्रथम डॉ० स्पुनर द्वार 1912-13 ई० में और दूसरा काशीप्रसाद जयसवाल शोध संस्था के तत्वाधान में 1951-55 ई० में। प्रथम उत्खनन ने इस स्थान के पुरातात्विक महत्व को पुष्ट तो किया परन्तु पुर्ण विवरण प्रस्तुत नही हो पाया मगर डॉ० स्पुनर की बडी उपलब्धि मौर्यकालीन सभाभवन को उदघाटित करना माना जाएगा।

1951-55 ई० के उत्खनन मे यहाँ छः संस्कृति काल निर्धारित किये गये।

(1) प्रथम संस्कृतिकाल के स्तर से मोटे प्रकार का धुसर मृदभाण्ड पाया गया, जिसके साथ लोहित मृदभाण्ड भी मिले। उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्ड भी कुछ मात्रा में पाये गये। इसका काल 150 ई०पू से पूर्व है। इस काल का उल्लेखनिय अवशेष मार्यकालीन भवन है।

(2) द्वितीय संस्कृतिकाल के स्तरो से शुंगकालीन पकी मिट्टी की मुर्तियाँ, कौशाम्बी प्रकार के वृषभ चिन्ह युक्त दो सिक्के, ताँबे के कुछ आहत सिक्के मौर्यकालीन स्तंभ के छोटे-छोटे टुकडे और उत्तरी कृष्णमार्जित मृदभाण्ड के ठीकरे मिले है। जिसका काल 150 ई०पू० से 100 ई० सन माना जाता है।

(3) तृतीय सांस्कृतिक पुरावशेषो में कुषाण सिक्के तथा पकी मिट्टी की शिखरनुमा शिरोभूषण वाली मुर्तिया प्रमुख है। इसका काल -100 से 300 ई० हैं।

(4) चतुर्थकाल के स्तरो में चंद्रगुप्त द्वितीय के ताँबे के सिक्के पाये गये। गुप्तकालीन लिपि की मृण्मयी मुद्राए तथा पकी मिट्टी की मुर्तियाँ बडी संख्या में मिली। जिसका काल 300 - 450 ई० हैं।

(5) पॉचवे काल में कुछ भी गुप्तकालीन अवशेष नही मिले। इस काल मे सामान्य प्रकार का लोहित मृदभाण्ड पाया गया। काल - 450-600 ई०

(6) पॉचवे काल के बाद छठे काल मे सातवी से लेकर सोलहवी सताब्दी तक कोई पुरावशेष नही मिला। लम्बे समय के बाद सत्रहवी शताब्दी के मृदभाण्ड पाये गये।

कुम्रहार मे जो कुछ पुरातात्विक साक्ष्य उत्खनित किये गये उनसे यह प्रमाणित हो गया कि यह स्थान मौर्यकालीन पाटलिपुत्र का महत्वपूर्ण भाग था, परन्तु यह निश्चित नही हो पाया कि मौर्य राजप्रसाद का निर्माण इसी स्थान पर किया गया था। कुछ विद्वानो की यह धारण है कि उत्खनित सभाभवन ही मौर्य राजप्रसाद का अवशेष है। यदि यह सभा मंडप राजप्रसाद का अंग होता तो इससे संलग्न अन्य राजकीय भवनों जैसे राजसभा, अंत:पुर, विश्रामगृह, उधान, पाकसाला, रक्षको के आवास, अश्वशाल, हस्तिशाला इत्यादि की व्यवस्था की गई होगी। तथा संभव खोज करने के बाद सभाभवन के अतिरिक्त अन्य मौर्यकालीन निर्माण के कुछ भी अवशेष नही मिले।

कुम्रहार में उत्खनित भवनावशेषो में मौर्यकालीन सभाभवन तथा मौर्योत्तर कालीन बौद्ध विहारो के अवशेष उल्लेखनीय है। 32.6 फुट ऊँचे एकखंडीय बालुकाश्म स्तम्भो का बना मार्यकालीन सभामंड़प नि:संदेह बडा ही भव्य रहा होगा। अस्सी स्तम्भयुक्त इस सभामंड़प मे उत्तर-दक्षिण दस-दस स्तम्भो की आठ पंक्तियाँ थी। स्तंभो की केन्द्राधारित दूरी एक दुसरे से 15 फुट थी। सभी स्तंभो का निर्माण चुनार के बालुकाश्म से किया गया था और उनको मौर्यकालीन प्रकार से मार्जित किया गया था। भवन निर्माण मे काष्ठ के प्रचुर उपयोग का अनुमान इस बात से लगता है कि इसके मलवे मे राख की एक फुट मोटी परत पायी गयी। मेगास्थनीज द्वारा काष्ठ निर्मित भव्य मौर्य प्रसाद के उल्लेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि तात्कालीन भवनो के निर्माण में लकड़ी का खुलकर उपयोग किया जाता था। संभवत: विचाराधीन भवन के छत तथा फर्श का निर्माण पुर्णत: अथवा अंशत: लकड़ी से किये जाने तथा इसके अन्य अलंकरण हेतू भी काष्ठ के प्रचुर उपयोग की संभावना प्रतीत होती है। इस भवन को नष्ट करने का काम विदेशी आक्रमणकारी यवनो का प्रतीत होता है क्योकि मौर्य को अंतिम वर्ष में यवन आक्रमण का शिकार होना पड़ा। जिसका उल्लेख गार्गी संहिता तथा पतंजलि के महाभाष्य में हुआ है। ध्वंसावशेष के उपर तथा निकट शुंग कालीन अवशेष से भी यही संकेत मिलते है। संभवत: सभाभवन को 150 ई०पू० तथा 100 ई० के बीच ध्वस्त किया गया होगा।

जैसा कि उपर उल्लेख किया गया, स्तम्भो की ऊँचाई 32.5 फुट थी, जिसमे नीचे का 9 फुट जमीन और भवन की कुर्सी के अंदर था। प्रत्येक स्तंभ को 5 फुट वर्गाकार तथा 5 फुट गहरी नीव मे 6 इंच मोटी गहरे नीले रंग की मिट्टी को आधार बना कर स्थापित किया गया था। भवन का फर्श अनुमानत: काष्ठनिर्मित था, परन्तु इसका कोई ठोस प्रमाण नही मिला। सभा भवन के दक्षिण मे लकड़ी की वेदिका, सोपान तथा नहर के साक्ष्य पाये जाने से इसी दिशा में प्रवेश द्वार होने का युक्ति संगत अनुमान लगाया जाता है। नहर 43

फुट चौड़ी एवं 10 फुट गहरी थी। डॉ० अल्टेकर के अनुमान के अनुसार नहर मार्ग से सभाभवन मे आने वाले विशिष्ठ व्यक्तियो के लिए निर्माण किया गया था। जहाँ तक नहर का प्रश्न है तो इसका निर्माण विशाल स्तम्भो को निर्माण स्थल तक लाने के लिए किया गया था और इसके बाद आवागमन के लिए उपयोग होता रहा।

सभाभवन के ध्वस्त होन के पश्चात् इस स्थान पर शुंगकाल से लेकर गुप्तोत्तर काल तक बौद्ध विहार बनाये जाने के साक्ष्य पाये गये। उत्खनन से यहाँ से कम-से-कम पाँच विहारो के अवशेष मिले- एक शुंगकालीन, दो कुषाणकालीन, एक गुप्तकालीन और एक गुप्तोत्तर काल (450-600ई०) का। शुंगकालीन विहार मे दो-दो या तीन-तीन कमरो के खंड़ बनाये गये थे। कुषाणकालीन विहार दो प्रकार के पाये गये।

गुप्तकालीन विहार के मलवे मे साभिलेख मुहर पाये जाने से इसका नाम आरोग्य विहार होने का पता चलता है। इस मुहर पर श्री आरोग्य विहार भिक्षु संघस्य अभिलिखित है। इसके अतिरिक्त एक ठीकरे पर भी आरोग्य विहारे उत्कीर्ण पाया गया। इसके अलावे लाल मृदभांड के टुकड़े मिले थे जिनपर धन्वतरे: शब्द उत्कीर्ण था जो संभवत: आरोग्य विहार के मुख्य चिकित्सक थे। अत: इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि गुप्तकालीन प्रसिद्ध चिकित्सक धन्वत्तरी द्वारा इस चिकित्सालय को चलाया जाता था।

इस प्रकार यहाँ से अनेक ताँबे के सिक्के, आभुषण, अंजनशलाका, मनके, चक्र, हाथी दांत निर्मित कलाकृति, पकी मिट्टी की मुहर, खिलौने, पकी मिट्टी से निर्मित मानव मृण- मूर्तियाँ, मृदभाण्ड, मिट्टी के पात्र मुख्य है।